गुप्तकालीन कला एवं संस्कृति

[7th lecture]

ममता रानी
अतिथि सहायक प्राध्यापक
(इतिहास विभाग)
एम एल एस आर के एम.
कॉलेज, सहरसा

Scanned with CamScanner

गुप्तकालीन कला एवं संस्कृति

→ गुप्तकाल में कला एवं संस्कृति का सबसे अधिक विकास हुआ था। निश्चित रूप से इस क्षेत्र में उपलब्धियों के लिए गुप्तकाल को **स्वर्णकाल** कहा जा सकता है। जिसका संक्षिप्त वर्णन निम्नलिखित है-

✡ **धर्म :-** गुप्तकाल में सभी शासक धर्मनिरपेक्ष माने गए हैं क्योंकि सभी धर्मों का विकास दिखलाई पड़ता है। जैसे -

वैष्णव धर्म / भागवत धर्म :-

इस धर्म का प्रमुख स्थान था। गुप्त शासकों ने इसे राजकीय धर्म के रूप में अपनाया था। इनके सिक्कों पर शंख, गदा, गरुड़ और लक्ष्मी का चित्र अंकित है।

शैव धर्म :-

वैष्णव धर्म के साथ-साथ इसका भी विकास दिखाई पड़ता है। कालीदास, भगवान शिव के भक्त थे। वीरसेन ने उदयगिरि की पहाड़ी (उड़ीसा) में शैव धर्म के भिक्षुओं के लिए गुफा का निर्माण कराया था। प्रमुख सामंत 'हस्तिन' भी शैव धर्म का अनुयायी था।

बौद्ध धर्म :- बौद्ध धर्म का विकास गुप्त काल में दिखाई पड़ता है। कुमारगुप्त-I ने नालंदा महाविहार का निर्माण कराया। चन्द्रगुप्त-II का मंत्री आम्रकार्दव बौद्ध भिक्षु था और प्रसिद्ध चीनी यात्री फाहियान बौद्ध धर्म के बारे में अधिक ज्ञान प्राप्त करने के लिए चन्द्रगुप्त II के समय भारत आया था। चित्रकला पर भी बौद्ध धर्म का प्रभाव दिखलाई पड़ता है।

→ **जैन धर्म :-** वल्लभी और मथुरा जैनधर्म के महत्वपूर्ण केन्द्र थे। गुप्तों के शासनकाल में वल्लभी में द्वितीय जैन संगीति का आयोजन हुआ था।

Scanned with CamScanner

अन्यधर्म:- अपौरूमन के साथ साथ उत्तरप्रदेश के बलंद शहर जिला में भाग्यात नामक स्थान से पूर्व मंदिर का भी प्रमाण मिला है।

मंदिर का नाम	स्थान
दशावतार मंदिर	देवगढ़ (झाँसी)
पार्वती मंदिर	नचनाकुठार (M.P)
भगवान शिव का मंदिर	खोह और भूमरा (M.P.
विष्णु मंदिर	तिगावाँ (MP)
लक्ष्मण मंदिर	भीतरगाँव (कानपुर) सिरपुर

→ दशावतार मंदिर सर्वश्रेष्ठ गुप्तकालीन मंदिर है जो भगवान विष्णु को समर्पित है।

→ लक्ष्मण का मंदिर ईंट से बना है।

→ विश्व की सबसे बड़ी बौद्ध मंदिर बोरोबुदूर (इंडोनेशिया) मे है।

→ विश्व की सबसे बड़ी हिन्दू (विष्णु) मंदिर अंकोरवाट (कम्बोडिया) मे है।

चित्रकला:- गुप्तकाल में अजंता और बाघ की चित्रकला सबसे अधिक लोकप्रिय है, जो बौद्ध धर्म से संबंधित है।

मूर्तिकला:- सभी धर्मों से संबंधित मूर्ति का निर्माण इस काल में हुआ। जैसे:- ब्रह्मा, विष्णु और शिव की संयुक्त मूर्ति, हरिहर की मूर्ति, पार्वती और शिव की संयुक्त अर्द्धनारीश्वर की मूर्ति का निर्माण सर्वप्रथम इस काल मे हुआ।

→ भगवान बुद्ध की धातु द्वारा निर्मित मूर्ति भागलपुर के सुल्तानगंज से मिला है जो सबसे बड़ा धातु

धातु की मूर्ति था। लेकिन अब चीन के द्वारा सबसे बड़ी मूर्ति बुद्ध को बना दी गई है।

→ भगवान बुद्ध की सबसे बड़ी पत्थर की मूर्ति अफगानिस्तान के बामियान के बेग्राम में स्थापित था, जिसको तालिबानी सरकार ने तोड़ दिया।

⇒ **विज्ञान एवं तकनीक :-** इस क्षेत्र में गुप्तकाल में बहुत अधिक विकास हुआ था, जिसका सबसे महत्वपूर्ण प्रमाण मेहरौली का लौहस्तंभ है। कुछ प्रमुख व्यक्ति गुप्तों के दरबार में थे। जैसे:-

आर्यभट्ट :- प्रसिद्ध गणितज्ञ जिन्होंने यह प्रमाणित किया कि पृथ्वी, सूर्य की परिक्रमा करती है और उसकी छाया पड़ने से सूर्यग्रहण और चन्द्रग्रहण होता है।
- यह दशमलव पद्धति के जनक हैं। इनकी प्रसिद्ध पुस्तक सूर्य सिद्धांत एवं आर्यभटीय है।
- किसी अज्ञात भारतीय ने शून्य का आविष्कार किया था।

वराहमिहिर :- यह खगोलशास्त्री थे। इन्होंने ग्रहों के आधार पर भविष्यवाणी करने की सिद्धांत को स्थापित किया था।

→ पंचसिद्धांतिका, लघु जातक और वृहद जातक इनकी पुस्तक है।

भास्कराचार्य :- यह भी आर्यभट्ट के समान प्रसिद्ध गणितज्ञ थे और इन्होंने आर्यभट्ट की पुस्तक पर भाष्य टीका लिखा था। जिसका नाम- लघु-भास्कराचार्य एवं वृहद - भास्कराचार्य है।

ब्रह्मगुप्त :→ इन्होंने गुरुत्वाकर्षण सिद्धांत को स्थापित किया था, जिसके अनुसार पृथ्वी में आकर्षण शक्ति होने के कारण सभी वस्तुएँ पृथ्वी की तरफ आकर्षित होती है। ब्रह्म सिद्धांत इनकी पुस्तक है।

Scanned with CamScanner

→ धन्वंतरि :- यह गुप्तकाल के प्रसिद्ध चिकित्सक थे। इनकी तुलना जीवक और चरक के साथ किया जाता है।

→ शिक्षा एवं साहित्य :-
वल्लभी एवं मथुरा के साथ नालंदा शिक्षा के महत्वपूर्ण केन्द्र थे। इन लोगों ने संस्कृत भाषा को राजकीय भाषा बनाया था, जिसमें बहुत सारी पुस्तकों को रचना किया गया।

→ सामाजिक जीवन :- गुप्तकाल में सामाजिक दशा में बहुत अधिक गिरावट दिखाई देता है। इस समय चार वर्ण की व्यवस्था और भी जटिल हो गया। लोगों के लिए नियम कानून अलग-अलग बना दिया गया और अछूत वर्ग के लोग की दशा सबसे निम्न कोटि का था। इस समय बहुत सारी मिश्रित जातियों का जन्म हुआ। जैसे :—

पिता		माता		जाति/संतान
ब्राह्मण	+	वैश्य	—	अम्बष्ठ
ब्राह्मण	+	शूद्र	—	पारशव/निषाद
वैश्य	+	शूद्र	—	उग्र
शूद्र	+	ब्राह्मण	—	चण्डाल

→ इसने सबसे अछूत श्रेणी में चण्डाल को शामिल किया गया है। कुछ विद्वानों के अनुसार डोम जाति का जन्म भी इसी काल में हुआ, जो चण्डाल के समान थे। ये लोग श्मशान घाट में निवास करते थे।

Scanned with CamScanner

→ महिलाओं की स्थिति :-

इस समय महिलाओं की स्थिति दयनीय थी। अब बाल विवाह, सती प्रथा, देवदासी प्रथा का प्रचलन शुरू हो गया। विधवाओं का जीवन कष्टमय था और वेश्यावृत्ति का प्रचलन भी समाज मे था। उज्जैन के महाकाल मंदिर मे लड़कियों को देवदासी के रूप में रखा (गया है) जाता था।

→ सतीप्रथा का सर्वप्रथम उल्लेख एरण अभिलेख (510 ई०) (MP.) मे किया गया है। यह अभिलेख गुप्त शासक भानुगुप्त से संबंधित है जिसके सेनापति गोपराज के मृत्यु के बाद उसकी पत्नी ने सतीप्रथा का पालन कर लिया।

नारद स्मृति मे दासप्रथा का उल्लेख भी किया गया है और नारद स्मृति मे ही सर्वप्रथम दासो को मुक्त करने की बात को भी शामिल किया गया है। भूमिदान देने की प्रथा ने इस काल मे शिक्षित वर्ग को जन्म दिया, जिसको कायस्थ कहा गया।

→ कायस्थो के बारे मे सर्वप्रथम जानकारी सर्वप्रथम याज्ञवल्क्य स्मृति मे मिलता है।
→ जाति के रूप में कायस्थो के बारे में सर्वप्रथम जानकारी ओशनस स्मृति मे मिलता है।
→ खानपान रहन-सहन, वेश-भूषा, आभूषण और मनोरंजन का साधन पहले के समान चला आ रहा था।

उपर्युक्त वर्णन से यह स्पष्ट है कि सामाजिक क्षेत्र मे यह स्वर्णकाल नही था।

⇒ आर्थिक जीवन :-

इस काल मे आर्थिक जीवन समृद्ध था जिसके अन्तर्गत निम्नलिखित तथ्यो को शामिल किया जाता है -

Scanned with CamScanner

→ कृषि :-

इस समय आर्थिक जीवन का मुख्य आधार कृषि था। आमदनी का मुख्य स्रोत भू राजस्व था, जो 1/6 भाग लिया जाता था। इस समय सिंचाई व्यवस्था पर भी ध्यान दिया जाता था।

→ रहट/घटीयंत्र से सिंचाई किया जाता था।
→ स्कन्दगुप्त के समय सुराष्ट्र के प्रांतपति पर्णदत्त के पुत्र चक्रपालित ने सुदर्शन झील का पुनर्निमाण कराया, जिसका उल्लेख गिरनार अभिलेख मे मिलता है।

→ इस समय भूमि का विभाजन निम्न रूपों मे किया गया है। जैसे :-

शब्दावली	अर्थ
क्षेत्रभूमि	– उपजाऊ भूमि
वास्तुभूमि	– निवास योग्य भूमि
चारागाह भूमि	– पशुओं के चारा के लिए भूमि
शील भूमि	– बंजर भूमि
अप्रहत	– जंगली भूमि।

→ अमर सिंह की पुस्तक अमरकोष में 12 प्रकार की भूमि का वर्णन किया गया है।

=x=

Scanned with CamScanner